स्नातकस्तरीय NEP 2020
चारवर्षीय स्नातक पाठ्यक्रम का प्रारूप

विषय–संस्कृत

संस्कृत एवं प्राकृतभाषा विभाग,

दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय,

गोरखपुर

2024

स्नातकस्तरीय NEP 2020 संस्कृत
पाठ्यक्रम का प्रारूप

सेमेस्टर के अनुसार प्रश्नपत्रों के शीर्षक तथा निर्धारित क्रेडिट			
वर्ष	कोर्स कोड	कोर्स का शीर्षक	क्रेडिट
प्रथम वर्ष		**सेमेस्टर–I**	
	SAN- 101F	गद्य एवं पद्य	**06**
		सेमेस्टर–II	
	SAN- 102F	संस्कृत व्याकरण–I	**06**
द्वितीय वर्ष		**सेमेस्टर–III**	
	SAN- 201F	वेद एवं उपनिषद्	**06**
		सेमेस्टर–IV	
	SAN- 202F	संस्कृत व्याकरण–II	**06**
	SAN- 203F	Research Project /Dissertation/Intership/Field work Survey	**03**
तृतीय वर्ष		**सेमेस्टर–V**	
	SAN-301F	काव्य एवं काव्यशास्त्र	**05**
	SAN-302F	भारतीय दर्शन	**05**
		सेमेस्टर–VI	
	SAN-303F	नाटक अलंकार एवं छंद	**05**
	SAN-304F	आधुनिक संस्कृत साहित्य	**05**

Ablity Enhancement Course

SAN-F नित्य नैमित्तिक अनुष्ठान
SAN-F सम्भाषण एवं अनुप्रयोग

Skill Enhancement Cours

SAN-F संस्कृत लेखन कौशल
SAN-F पंचाग कौशल

UG Honors

सेमेस्टर के अनुसार प्रश्नपत्रों के शीर्षक तथा निर्धारित क्रेडिट			
वर्ष	कोर्स कोड	कोर्स का शीर्षक	क्रेडिट
सप्त सेमेस्टर	**SAN- 401F**	वैदिकसूक्त	04
	SAN- 402F	भाषाविज्ञान	**04**
	SAN- 403F	दर्शन	**04**
	SAN- 404F	काव्य	**04**
	SAN- 405F	व्याकरण	**04**
अष्ट सेमेस्टर			
	SAN- 406F	ब्राह्मण एवं यज्ञ	**04**
	SAN- 407F	मध्यभारतीय आर्य भाषाएं	**04**
	SAN- 408F	नाटक एवं नाट्यशास्त्र	**04**
	SAN- 409F	काव्यशास्त्र	**04**
	SAN- 410F	व्याकरण प्रकिया	**04**

UG Honors With Research

सेमेस्टर के अनुसार प्रश्नपत्रों के शीर्षक तथा निर्धारित क्रेडिट			
वर्ष	कोर्स कोड	कोर्स का शीर्षक	क्रेडिट
सप्त सेमेस्टर	**SAN- 401F**	वैदिकसूक्त	04
	SAN- 402F	नाटक एवं नाट्यशास्त्र	04
	SAN- 403F	दर्शन	04
	SAN- 404F	काव्य एवं काव्यशास्त्र	04
	SAN- 405F	व्याकरण	04
अष्ट सेमेस्टर	**SAN- 406F**	भारतीय ज्ञान परम्परा	04
	SAN- 407F	भारतीय संस्कृति एवं पर्यावरण	04
	SAN- 408F	रिसर्च प्रोजेक्ट	12

विषय-संस्कृत(स्नातक स्तर)

Programme Outcomes (POs)

POs - 1 विद्यार्थियों को लेखन, वाचन एवं अध्ययन की दृष्टि से भाषागत दक्षता प्राप्त होगी।

POs – 2 सहज एवं स्वाभाविक रूप से भाषागत *प्रवीणता* प्राप्त कर उनमें प्रभावशाली अभिव्यक्ति की क्षमता उत्पन्न होगी।

POs – 3 आत्मविश्वास से युक्त एवं नेतृत्व क्षमता के धारक होंगे।

POs – 4 नैतिक एवं चारित्रिक दृष्टि से मूल्यवान व्यक्तित्वधारी होकर भारतीयता के बोध के साथ वैश्विक नागरिक के रूप में भावी चुनौतियों का सामना करने में *समर्थ* होंगे।

Programme Specific Outcomes (PSOs)

PSO – 1 सर्वाधिक वैज्ञानिक भाषा के रूप में संस्कृत भाषा के प्राचीन महत्व एवं उसकी वर्तमान प्रासंगिकता को जानने-समझने योग्य होंगे।

PSO – 2 संस्कृत साहित्य की विभिन्न विधाओं (गद्य, पद्य, नाटक, व्याकरण इत्यादि) से सुपरिचित होकर संस्कृत मर्मज्ञ बन सकेंगे ।

PSO – 3 संस्कृत व्याकरण के विभिन्न अंगों के ज्ञान द्वारा भाषा के शुद्ध अध्ययन, लेखन एवं उच्चारण माध्यम से अभिव्यक्ति कौशल का विकास होगा।

PSO – 4 आयुर्वेद, वास्तुशास्त्र, ज्योतिष, नित्यनैमित्तिक कर्मकांड इत्यादि के माध्यम से जीविकोपार्जन के योग्य बनेंगे।

PSO – 5 वैदिक एवं लौकिक संस्कृत साहित्य की *समृद्धि* एवं *उसमें निहित* नैतिकता व आध्यात्मिकता को अनुभूत कर भारतीय संस्कृति के महत्व को वैश्विक स्तर तक पहुंचाने में *समर्थ* होंगे।

PSO– 6 धर्म-दर्शन, आचार-व्यवहार, नीति शास्त्र एवं भारतीय संस्कृति के मूल तत्वों को जानकर उत्तम चरित्रवान मानव एवं कुशल नागरिक बनेंगे।

PSO– 7 समसामयिक समस्याओं के समाधान के रूप में संस्कृत साहित्य में निबद्ध सर्वांगीणता के प्रति शोधपरक दृष्टि का विकास होगा।

Year: First		Semester: I
SAN-101F	***कोर्स–1* - गद्य** एवं पद्य	*क्रेडिट 06*

Course outcomes: अधिगम उपलब्धि-

CO-1 विद्यार्थी संस्कृत साहित्य का सामान्य परिचय प्राप्त कर काव्य के विभिन्न भेदों से परिचित हो सकेंगे |

CO-2 *वे* संस्कृत **गद्य** एवं पद्य साहित्य की सुगीतात्मकता का सौंदर्यबोध कर सकेंगे |

CO-3 उनमें काव्य में प्रयुक्त रस,छंद,अलंकारों को समझने की क्षमता विकसित होगी |

CO-4 पद्य में निहित सूक्तियों एवं सुभाषित वाक्यों के माध्यम से उनका नैतिक एवं चारित्रिक उन्नयन होगा |

CO-5 विद्यार्थियों के शब्दकोश में वृद्धि होने के साथ-साथ वह संस्कृत श्लोकों के शुद्ध और सस्वर उच्चारण के कौशल में निपुण बनेंगे |

CO-6 राष्ट्रभक्ति की भावना प्रबल होगी तथा उत्तम नागरिक बनेंगे |

Unit /इकाई	Topics /पाठ्य विषय
I	संस्कृत पद्य साहित्य का सामान्य परिचय एवं प्रमुख आचार्य प्रमुख कवि- महाकवि वाल्मीकि, महाकवि वेदव्यास, महाकवि कालिदास, महाकवि भारवि, महाकवि माघ, श्रीहर्ष *एवं जयदेव।*
II	गद्य साहित्य का उद्भव एवं विकास प्रमुख साहित्यकार - बाणभट्ट, दण्डी ,सुबंधु, अंबिकादत्तव्यास,
III	किरातार्जुनीयम्- प्रथम सर्ग, श्लोक संख्या 1 से 25 (व्याख्या एवं समीक्षात्मक प्रश्न)
IV	नीतिशतकम्, श्लोक संख्या 1 से 25 (अर्थ एवं मूल्यपरक प्रश्न)
V	शुकनासोपदेश (व्याख्या)
VI	शिवराजविजयम्-प्रथम निश्वास (व्याख्या)

सतत मूल्यांकन-

पाठ्यक्रम में निर्धारित ग्रंथों पर आधारित अधिन्यास(असाइनमेंट)

अथवा

संस्कृत श्लोकों के शुद्ध उच्चारण की प्रायोगिक/मौखिक परीक्षा

संस्तुत ग्रंथ-

- किरातार्जुनीयम् (प्रथम सर्ग), डॉ राजेंद्र मिश्र, अक्षयवट प्रकाशन, इलाहाबाद
- किरातार्जुनीयम् (प्रथम सर्ग), डॉ जनार्दन शास्त्री, मोतीलाल बनारसीदास पब्लिकेशन, दिल्ली
- किरातार्जुनीयम् महाकाव्य, अनु. श्री राम प्रताप त्रिपाठी, लोकभारती प्रकाशन इलाहाबाद
- कुमारसंभवम् (प्रथम सर्ग), डॉ उमेश चंद्र पांडे, प्राच्य भारतीय प्रकाशन,गोरखपुर
- कुमारसंभवम् (प्रथम सर्ग), श्री कृष्णमणि त्रिपाठी, चौखंबा प्रकाशन, वाराणसी
- नीतिशतकम्, भर्तृहरि, (व्या०) सावित्री गुप्ता , विद्यानिधि प्रकाशन, दिल्ली, 2008
- नीतिशतकम्, भर्तृहरि, (व्या०) राकेश शास्त्री, परिमल पब्लिकेशन, दिल्ली , 2003
- नीतिशतकम्, समीर आचार्य, प्राच्य भारती प्रकाशन, गोरखपुर
- संस्कृत साहित्य का इतिहास, डॉ बलदेव उपाध्याय, चौखंबा प्रकाशन, वाराणसी
- संस्कृत साहित्य का इतिहास उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', चौखंबा भारती अकादमी, वाराणसी, पुनर्मुद्रित 2012
- संस्कृत साहित्य का इतिहास, वाचस्पति गैरोला, चौखंबा विद्याभवन वाराणसी, पंचम संस्करण , 1997
- शुकनासोपदेश,बाणभट्ट, (संपा.) चंद्रशेखर द्विवेदी,महालक्ष्मी प्रकाशन, आगरा, प्रथम संस्करण 1986-87

- शुकनासोपदेश, रामनाथ शर्मा सुमन, साहित्य भंडार, मेरठ
- शुकनासोपदेश, डॉ महेश कुमार श्रीवास्तव, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी
- शुकनासोपदेश(कादंबरी), डॉ उमेश चंद्र पांडे, प्राच्य भारतीय संस्थान, गोरखपुर
- शिवराजविजयम्, अंबिकादत्त व्यास संपा. शिव करण शास्त्री महालक्ष्मी प्रकाशन, आगरा
- शिवराजविजयम्, डॉ रमा शंकर मिश्र, चौखंबा प्रकाशन, वाराणसी
- शिवराजविजयम्, डॉ महेश कुमार श्रीवास्तव, विश्वविद्यालय प्रकाशन
- शिवराजविजयम्, डॉ देव नारायण मिश्र, साहित्य भंडार, मेरठ
- संस्कृत साहित्य का इतिहास, बलदेव उपाध्याय, चौखंबा प्रकाशन, वाराणसी
- साहित्य का संक्षिप्त इतिहास, डॉ उमेश चंद्र पांडे, प्राच्य भारतीय संस्थान, गोरखपुर

Year: First		Semester: II
SAN-102F	***कोर्स–2*** - संस्कृत व्याकरण-I	*क्रेडिट 06*

Course outcomes: अधिगम उपलब्धि-

CO-1 संस्कृत व्याकरण का सामान्य ज्ञान प्राप्त कर उसकी वैज्ञानिकता से सुपरिचित हो सकेंगे |

CO-2 संस्कृत वर्णों के शुद्ध उच्चारण कौशल का विकास होगा |

CO-3 स्वर एवं व्यंजन के मूल भेद को समझ कर पृथक अर्थावगमन की क्षमता उत्पन्न होगी |

CO-4 स्वर,व्यंजन एवं विसर्ग संधि का विशिष्ट ज्ञान एवं उनके अनुप्रयोग का कौशल विकसित होगा|

Unit / इकाई	**Topics / पाठ्य विषय**
I	*संस्कृत व्याकरण शास्त्र का सामान्य परिचय एवं मुनित्रय*
II	संज्ञा प्रकरण (लघु सिद्धांत कौमुदी)
III	अच् संधि (सूत्र व्याख्या एवं सूत्र निर्देश पूर्वक संधि एवं संधि विग्रह)
IV	हल् संधि *(मोऽनुस्वारः सूत्र पर्यन्त)* (सूत्र व्याख्या एवं सूत्र निर्देश पूर्वक संधि एवं संधि विग्रह)
V	विसर्ग संधि (सूत्र व्याख्या एवं सूत्र निर्देश पूर्वक संधि एवं संधि विग्रह)
VI	*शब्द रूप कण्ठस्थीकरण* –राम, सर्व, हरि, सखि, *भानु, गो, पितृ, रमा, मति, स्त्री, वधू, ज्ञान, वारि।*

सतत मूल्यांकन- लिखितपरीक्षा (वस्तुनिष्ठ/लघुउत्तरीय)

अथवा

माहेश्वर सूत्र एवं प्रत्याहार निर्माण विषयक परियोजना कार्य एवं मौखिक

संस्तुत ग्रंथ-

- लघु सिद्धांत कौमुदी , वरदराज, भैमी व्याख्या , भीमसेन शास्त्री (1-6 भाग) ,भैमी प्रकाशन, दिल्ली 1993
- लघु सिद्धांत कौमुदी, गोविंद प्रसाद शर्मा एवं आचार्य रघुनाथ शास्त्री,चौखंबा सुरभारती प्रकाशन
- लघु सिद्धांत कौमुदी, डॉ उमेश चंद्र पांडे, चौखंबा प्रकाशन
- लघु सिद्धांत कौमुदी (संज्ञा संधि प्रकरण), डॉ वेदपाल, साहित्य भंडार, मेरठ
- लघु सिद्धांत कौमुदी, डॉ रामकृष्ण आचार्य, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा

Year: Second		Semester: III
SAN-201F	***कोर्स–3*** *– वेद एवं उपनिषद्*	*क्रेडिट 06*

Course outcomes: अधिगम उपलब्धि-

CO-1 वैदिक वाङ्मय एवं संस्कृति का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे |

CO-2 वैदिक एवं औपनिषदिक संस्कृति के प्रति गौरव बोध होगा |

CO-3 वेदोक्त संदेशों एवं मूल्यों के माध्यम से आचरण का उदात्तीकरण होगा |

CO-4 उपनिषद्का सामान्य परिचय एवं निहित उपदेशों का अवबोध होगा |

CO-5 औपनिषदिक कर्म संयमभक्ति एवं त्याग मूलक संस्कृति से परिचित होंगे |

CO-6 वैदिक एवं औपनिषदिक संस्कृति के प्रति गौरव बोध होगा वैदिक सूक्तों के माध्यम से विद्यार्थियों को तत्कालीन आध्यात्मिक सामाजिक एवं राष्ट्रीय परिदृश्य का निदर्शन होगा |

Unit / इकाई	**Topics / पाठ्य विषय**
I	वैदिक वाङ्मय का सामान्य परिचय (संहिता, ब्राह्मण , आरण्यक, उपनिषद् एवं वेदांग)
II	ऋग्वेद संहिता- अग्नि सूक्त(1.1), विष्णु सूक्त (1.154),
III	पुरुष सूक्त (10.90), हिरण्यगर्भ सूक्त (10.121),वाक्सूक्त (10.125)
IV	यजुर्वेद संहिता-शिव संकल्प सूक्त ***(शुक्ल यजु 34 अध्याय 1–6 मंत्र)*** अथर्ववेद संहिता – पृथ्वी सूक्त (12.1) (1 से 12 मन्त्र), सामनस्यसूक्त (3.30)
VI	ईशावास्योपनिषद् (व्याख्या एवं समीक्षात्मक प्रश्न), ***कठोपनिषद् (प्रथम वल्ली)***
VII	***कठोपनिषद् (द्वितीय एवं तृतीय वल्ली)***

सतत मूल्यांकन-

वैदिक मंत्रों का शुद्ध एवं स्वर उच्चारण (भावार्थसहित)

अथवा

अधिन्यास (असाइनमेंट) एवं मौखिकी

संस्तुत ग्रंथ-

- ईशावास्योपनिषद्, डॉ शिव प्रसाद द्विवेदी चौखंबा, वाराणसी
- ईशावास्योपनिषद्,गीता प्रेस, गोरखपुर , 1994
- ऋग्वेद संहिता राम गोविंद त्रिवेदी चौखंबा विद्याभवन, वाराणसी
- ऋक्सूक्त संग्रह, हरिदत्त शास्त्री, साहित्य भंडार, मेरठ
- ऋक्सूक्त सौरभ, डॉ आर.के.लौ, ज्ञान प्रकाशन, मेरठ
- सूक्त संकलन, प्रोफेसर विश्वंभर नाथ त्रिपाठी, चौखंबा प्रकाशन
- सूक्त संकलन, डॉ उमेश चंद्र पांडे, प्राच्य भारती प्रकाशन, गोरखपुर
- वेदामृतमंजूषिका, डॉ प्रयाग नारायण मिश्र, प्रकाशन केन्द्र ,लखनऊ
- वैदिक साहित्य एवं संस्कृति, वाचस्पति गैरोला, चौखंबा प्रकाशन
- वैदिक साहित्य का इतिहास, डॉ करण सिंह, साहित्य भंडार मेरठ,
- वैदिक साहित्य की रूपरेखा, प्रो.राममूर्ति शर्मा, चौखंबा प्रकाशन, वाराणसी
- वैदिक साहित्य एवं संस्कृति, आचार्य बलदेव उपाध्याय, चौखंबा प्रकाशन

Year: First		Semester: IV
SAN-202F	***कोर्स–4* - संस्कृत *व्याकरण*–II**	*क्रेडिट 06*

Course outcomes: अधिगम उपलब्धि-

CO-1 व्याकरण परक शब्दों की सिद्धि प्रक्रिया से परिचित हो सकेंगे |

CO-2 व्याकरण शास्त्र के ज्ञान के माध्यम से शुद्ध वाक्य विन्यास कौशल का विकास हो सकेगा |

Unit /इकाई	Topics / पाठ्य विषय
I	अजन्तप्रकरण (लघु सिद्धांत कौमुदी) पुल्लिंग - राम, सर्व, हरि, सखि, *पितृ* सूत्र व्याख्या एवं शब्द रूप सिद्धि
II	अजन्त प्रकरण (लघु सिद्धांत कौमुदी) स्त्रीलिंग – रमा, सर्वा, मति एवं नपुंसकलिंग –ज्ञान, वारि- सूत्र व्याख्या एवं शब्द रूप सिद्धि
III	हलन्तप्रकरण (लघुसिद्धांतकौमुदी) पुल्लिंग -इदम्,राजन्, तद् ,अस्मद्, युष्मद् (*इन शब्दों की विभक्ति एवं वचन का निर्देश करना*)
IV	हलन्त प्रकरण (लघु सिद्धांत कौमुदी) स्त्रीलिंग –किम् अप् इदम् एवं नपुंसकलिंग-इदम् अहन् सूत्र व्याख्या एवं शब्द रूप सिद्धि
VI	*समास परिचय एवं केवल , अव्ययीभाव, बहुब्रीहि समास*
VII	*तत्पुरुष एवं द्वन्द्व समास*

सतत मूल्यांकन-

लिखितपरीक्षा (वस्तुनिष्ठ / लघुउत्तरीय)

संस्तुत ग्रंथ-

- लघु सिद्धांत कौमुदी, वरदराज, भैमी व्याख्या, भीमसेन शास्त्री (1-6 भाग),भैमी प्रकाशन, दिल्ली 1993
- लघु सिद्धांत कौमुदी, गोविंद प्रसाद शर्मा एवं आचार्य रघुनाथ शास्त्री, चौखंबा सुरभारती प्रकाशन
- लघु सिद्धांत कौमुदी, डॉ उमेश चंद्र पांडे, चौखंबा प्रकाशन
- लघु सिद्धांत कौमुदी डॉ रामकृष्ण आचार्य विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा

Year: Second		Semester: IV
SAN-203F	***कोर्स–5* – Research Project /Dissertation/Intership/Field work Survey**	*क्रेडिट 03*

Year: Third		Semester: V
SAN-301F	***कोर्स–6* काव्य एवं काव्यशास्त्र**	*क्रेडिट 05*

Course outcomes: अधिगम उपलब्धि-

CO-1 विद्यार्थी काव्यशास्त्र के उद्भव और विकास से सुपरिचित होकर काव्य शास्त्रीय तत्वों को समझने में *समर्थ* होंगे |

Unit / इकाई	**Topics / पाठ्य विषय**
I	संस्कृत काव्यशास्त्र परंपरा तथा प्रमुख काव्य शास्त्रीय ग्रंथ एवं आचार्य- भामह, दण्डी, वामन, आनंदवर्धन, मम्मट, कुंतक, क्षेमेंद्र, विश्वनाथ, जगन्नाथ
II	साहित्य दर्पण (प्रथम एवं द्वितीय परिच्छेद)
III	साहित्य दर्पण (तृतीय परिच्छेद)
IV	*साहित्य दर्पण के आधार पर वस्तुभेद, नायक–नायिकाभेद, अर्थ प्रकृति, कार्यावस्थाऐं, संधियां तथा रूपकभेद*
V	*शिशुपालवधम् प्रथम सर्ग श्लोक 01–30 तक*

सतत मूल्यांकन-

अधिन्यास (असाइनमेंट) एवंमौखिकी

संस्तुत ग्रंथ-

- साहित्य दर्पण (विश्वनाथ कविराज), सत्यव्रत सिंह, चौखंबा विद्याभवन, वाराणसी
- साहित्य दर्पण, शालिग्राम शास्त्री मोतीलाल बनारसीदास प्रकाशन, वाराणसी
- साहित्य दर्पण, राज किशोर सिंह प्रकाशक केंद्र, लखनऊ
- संस्कृत साहित्य का इतिहास उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', चौखंबा भारती अकादमी, वाराणसी, पुनर्मुद्रित 2012
- संस्कृत साहित्य का इतिहास, वाचस्पति गैरोला, चौखंबा विद्याभवन वाराणसी, पंचम संस्करण 1997

Year: Third		Semester: V
SAN-302F	***कोर्स–7 भारतीय दर्शन***	*क्रेडिट 05*

Course outcomes: अधिगम उपलब्धि-

CO-1 भारतीय दार्शनिक तत्वों का सामान्य ज्ञान प्राप्त होगा।

CO-2 दार्शनिक तत्वों मेंअनुस्यूत गूढ़ार्थ बोध होगा।

CO-3 दार्शनिक तत्वों के प्रति विश्लेषणात्मक एवं तार्किक क्षमता का विकास होगा |

CO-4 दर्शन में विद्यमान नैतिक एवं कल्याणपरक तथ्यों से आत्मोत्कर्ष की अभिप्रेरणा प्राप्त होगी।

CO-5 भारतीय दर्शन में निहित उद्देश्यों एवं ज्ञान को आचरण में समाहित करने हेतु अभिप्रेरित होंगे।

CO-6 गीता ज्ञान रहस्य द्वारा सृष्टि कल्याणार्थ भाव विकसित होंगे।

Unit /इकाई	**Topics / पाठ्य विषय**
I	भारतीय दर्शन का सामान्य परिचय, दर्शन का अर्थ एवं महत्व
II	श्रीमद्भगव दगीता- द्वितीय अध्याय
III	श्रीमद्भगव दगीता- तृतीय अध्याय
IV	तर्कसंग्रह (आरंभ से प्रत्यक्ष खंड पर्यन्त)
	तर्कसंग्रह (अनुमान से समाप्ति पर्यन्त)

सतत मूल्यांकन-

लिखित परीक्षा (वस्तुनिष्ठ /लघुउत्तरीय)

संस्तुतग्रंथ-

- श्रीमद्भगवद्गीता , (सम्पा०) गजानन शंभू साधले शास्त्री,परिमल पब्लिकेशन, दिल्ली, 1985
- श्रीमद्भगवद्गीता, हरि कृष्णदास गोयन्दका, गीता प्रेस, गोरखपुर , 2009
- तर्कसंग्रह, अन्नम्भट्ट , (व्या०) चंद्रशेखर द्विवेदी, महालक्ष्मी प्रकाशन, आगरा
- तर्कसंग्रह, अन्नम्भट्ट ,(व्या०) केदारनाथ त्रिपाठी, चौखंबा प्रकाशन , वाराणसी
- भारतीय दर्शन की भूमिका, रामानंद तिवारी, भारती मंदिर, भरतपुर, 1958
- भारतीय दर्शन, जगदीश चंद्र मिश्र, चौखंबा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी, 2010
- भारतीय दर्शन, आलोचन और अनुशीलन, चंद्रधर शर्मा, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली, 2004
- भारतीय दर्शन का इतिहास,एस.एन. दासगुप्ता (अनु) कला नाथ शास्त्री एवं सुधीर कुमार (पांच भागों में), राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी, जयपुर, 1969-1989
- भारतीय दर्शन, एस. राधाकृष्णन, (अनु०) नंदकिशोर गोभिल, राजपाल एंड संस, दिल्ली, 1989
- भारतीय दर्शन की रूपरेखा, एम.हिरियन्ना , (अनु०) गोवर्धन भट्ट मंजू गुप्त एवं सुखबीर चौधरी, राजकमल प्रकाशन , दिल्ली 1965

Year: Third		Semester: VI
SAN-303F	***कोर्स–8* नाटक, अलंकार एवं छंद**	*क्रेडिट 05*

Course outcomes: अधिगम उपलब्धि-

- **CO-1** संस्कृत नाट्य साहित्य को सामान्य रूप से समझ सकने में सक्षम होंगे |
- **CO-2** नाटक की पारिभाषिक शब्दावली से सुपरिचित होंगे |
- **CO-3** नाटक में प्रयुक्त रस, छंद एवं अलंकारों का सम्यक बोध कर सकेंगे |
- **CO-4** संवाद एवं अभिनय कौशल में पारंगत होंगे |
- **CO-5** नवीन पदों के ज्ञान द्वारा उनके शब्दकोश में वृद्धि होगी |
- **CO-6** भारतीय सांस्कृतिक तत्वों एवं मूल्यों को आत्मसात कर, भारतीयता के गर्व बोध से युक्त उत्तम नागरिक बनेंगे |

Unit / इकाई	**Topics / पाठ्य विषय**
I	नाट्य साहित्य परंपरा तथा प्रमुख नाटककार- भास, अश्वघोष. भवभूति. भट्टनारायण, विशाखदत्त
II	अभिज्ञान शाकुंतलम् (1 से 2 अंक)
III	अभिज्ञान शाकुंतलम् (3 से 4 अंक)
IV	स्वप्नवासवदत्तम् (प्रथम अंक) एवं नाट्यशास्त्रीय परिभाषिक टिप्पणियां–नान्दी, आमुख, सूत्रधार, प्रवेशक, विष्कम्भक, जनान्तिक, अपवारित, आकाशभाषित, स्वगत, प्रकाश, विदूषक, कञ्चुकी, भरतवाक्य।
V	छंद (वृत्तरत्नाकर से अधोलिखित छंद) अनुष्टुप् ,आर्या, वंशस्थ, द्रुतविलंबित, भुजंगप्रयात, बसंततिलका, इंद्रवज्रा, उपेंद्रवज्रा, उपजाति, मालिनी, मंदाक्रांता, शिखरिणी, शार्दूलविक्रीडित, स्रग्धरा अलंकार (साहित्य दर्पण से अधोलिखित अलंकार) अनुप्रास, यमक, उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा, संदेह, भ्रांतिमान्, दृष्टांत, निदर्शना, विभावना, विशेषोक्ति, अर्थान्तरन्यास, समासोक्ति

सतत मूल्यांकन-

पाठ्यक्रम में निर्धारित नाटकों पर आधारित संवाद एवं अभिनय कौशल परीक्षा

अथवा

पाठ्यक्रम में निर्धारित ग्रंथों पर आधारित अधिन्यास (असाइनमेंट) एवं मौखिकी

संस्तुत ग्रंथ-

- अभिज्ञानशाकुन्तलम्, डॉ कपिल देव द्विवेदी, रामनारायण लाल विजय कुमार प्रकाशन, इलाहाबाद
- अभिज्ञानशाकुन्तलम्, डॉ उमेश चंद्र पांडे, प्राच्य भारतीय संस्थान गोरखपुर
- अभिज्ञानशाकुन्तलम्, डॉ रमाशंकर त्रिपाठी, विश्वविद्यालय प्रकाशन
- अभिज्ञानशाकुन्तलम्, डॉ निरूपण विद्यालंकार, साहित्य भंडार, मेरठ
- स्वप्नवासवदत्तम्, श्री तरणीश झा, रामनारायण लाल बेनी माधव प्रकाशक, इलाहाबाद
- स्वप्नवासवदत्तम्, जय कृष्ण दास हरिदास गुप्त, चौखंबा संस्कृत सीरीज, वाराणसी
- संस्कृत नाटक उद्भव और विकास, डॉ ए.वी.कीथ, अनुवादक उदयभानु सिंह
- नाट्य साहित्य का इतिहास और नाट्य सिद्धांत ,जय कुमार जैन, साहित्य भंडार, मेरठ, 2012
- संस्कृत के प्रमुख नाटककार और उनकी कृतियां, डॉ गंगासागर राय
- संस्कृत साहित्य का इतिहास उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', चौखंबा भारती अकादमी, वाराणसी, पुनर्मुद्रित 2012
- संस्कृत साहित्य का इतिहास, वाचस्पति गैरोला, चौखंबा विद्याभवन वाराणसी, पंचम संस्करण 1

Year: Third		Semester: VI
SAN-304F	***कोर्स–9*** **आधुनिक संस्कृत साहित्य**	*क्रेडिट 05*

Course outcomes: अधिगम उपलब्धि-

CO-1 आधुनिक संस्कृत-कवियों से सुपरिचित होंगे।

CO-2 नवीन बिम्बविधानों एवं नवीन विषयों का ज्ञान प्राप्त होगा।

CO-3 आधुनिक संस्कृत-साहित्य के बाल-साहित्य से परिचित होते हुए संस्कृत-शिक्षण की सरलतम विधि के प्रति उन्मुख होंगे।

CO-4 आधुनिक संस्कृत-साहित्य में विद्यमान नैतिक एवं कल्याणपरक तथ्यों से आत्मोत्कर्ष की अभिप्रेरणा प्राप्त होगी।

CO-5 आधुनिक संस्कृत-साहित्य में निहित उद्देश्यों एवं ज्ञान को आचरण में समाहित करने हेतु अभिप्रेरित होंगे।

Unit /इकाई	Topics /पाठ्य विषय
I	आधुनिक संस्कृत साहित्य का सामान्य परिचय
II	आधुनिक काव्य उत्तरसीताचरितम् (सप्तम सर्ग- विद्याधिगम:) ***30 श्लोक पर्यन्त*** प्रो. रेवा प्रसाद द्विवेदी श्रम-माहात्म्यम् (षोडशी) -श्रीधर भास्कर वर्णेकर
III	आधुनिक-नाटक - क्षत्रपति साम्राज्यम् (प्रथम अंक) –श्रीमूलशंकरमाणिकलाल "याज्ञिक" संस्कृत उपन्यास - पद्मिनी (प्रथम एवं द्वितीय ***विकास***) -मोहन लाल शर्मा पांडे
IV	संस्कृत गीति काव्य-तदेव गगनं सैव धरा -आचार्य श्रीनिवास "रथ संस्कृत कथा-कथा मुक्तावली (क्षणिक विभ्रम:) पण्डिता क्षमाराव
V	संस्कृत सुभाषित दीपमालिका,पं. वासुदेव द्विवेदी शास्त्री

सतत मूल्यांकन-

आधुनिक संस्कृत पुस्तक समीक्षा एवं मौखिकी

अथवा

आधुनिक संस्कृत साहित्य का सर्वेक्षण एवं मौखिकी

संस्तुत ग्रंथ-

- कथा मुक्तावली (पण्डिता क्षमाराव) P. J. Pandya for N.M. Tripathi Ltd, Princess Street,Bombay-2
- उत्तरसीताचरितम् - (प्रो. रेवा प्रसाद द्विवेदी) कालिदास संस्थानम्,वाराणसी -५
- षोडशी- श्रीधर भास्कर वर्णेकर ,सम्पादक एवं संकलनकर्ता –प्रो.राधावल्लभ त्रिपाठी,साहित्य अकादमी, नई दिल्ली
- क्षत्रपति साम्राज्यम् - श्रीमूलशंकरमाणिकलालयाज्ञिक,व्याख्याकार-डा.नरेश झा,चौखम्भा सुरभारती प्रकाशन,वाराणसी
- तदेव गगनं सैव धरा - आचार्य श्रीनिवास "रथ" नाग पब्लिशर्स १९९५
- दीपमालिका वासुदेव द्विवेदी शास्त्री, सार्वभौम संस्कृत प्रचार संस्थान, वाराणसी
- पद्मिनी, मोहन लाल शर्मा पांडे, पांडे प्रकाशन जयपुर
- संस्कृत वाङ्मय का वृहद इतिहास, सप्तम खंड- आधुनिक संस्कृत साहित्य का इतिहास, श्री बलदेव उपाध्याय , उत्तर प्रदेश संस्कृत संस्थान लखनऊ, प्रथम संस्करण 2000
- आधुनिक संस्कृत साहित्य संदर्भ सूची, (संपादक) राधावल्लभ त्रिपाठी राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान नई दिल्ली
- आधुनिक संस्कृत काव्य की परिक्रमा, मंजू लता शर्मा , राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान , नई दिल्ली
- http://www.SAN-skrit.nic.in/ASSP/index.html

Ablity Enhancement Course

SAN-F	***कोर्स–1*** **- नित्य नैमित्तिक अनुष्ठान**	*क्रेडिट 02*

Unit /इकाई	Topics /पाठ्य विषय
I	नित्य विधि(प्रात: *जागरण*, स्नान, संध्या, तर्पण तथा पंचयज्ञ) स्वस्तिवाचन, संकल्प ,गौरी -गणेश- पूजन तथा वरुणकलश -स्थापन
II	षोडशोपचार पूजन, कुशकंडिका- विधि ,मंडप- कुंड- निर्माण तथा होम विधि रुद्राभिषेक ,महामृत्युंजय जप तथा नवचंडी विधान
III	प्राग्जन्म तथा जातकर्म संस्कार, अन्नप्राशन तथा चौल कर्म
IV	यज्ञोपवीत तथा विवाह संस्कार
V	गृहारंभ तथा गृह प्रवेश

सतत मूल्यांकन-

अधिन्यास (असाइनमेंट) एवंमौखिकी (मंत्रोच्चार परीक्षा)

लिखितपरीक्षा (वस्तुनिष्ठ/लघुउत्तरीय)

संस्तुत ग्रंथ-

- पारस्करगृहयसूत्र संपा. सुधाकर मालवीय, चौखंबा संस्कृत संस्थान, वाराणसी
- कर्म कौमुदी, डॉ बृजेश कुमार शुक्ल, नाग प्रकाशक, दिल्ली 2001
- कर्मठगुरु, मुकुंद बल्लभ मिश्र, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली 2001
- आपस्तम्बीयकर्म मीमांसा, प्रयाग नारायण मिश्र, प्रतिभा प्रकाशन, दिल्ली
- हिंदू संस्कार, राजबली पांडे चौखंबा विद्याभवन, वाराणसी 1995
- धर्म शास्त्र का इतिहास, प्रथम भाग ,अर्जुन चौबे ,उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान, लखनऊ
- संस्कार प्रकाश, भवानी शंकर त्रिवेदी, लाल बहादुर शास्त्री केंद्रीय संस्कृत विद्यापीठ, दिल्ली
- पौरोहित्यकर्म प्रशिक्षक, उत्तर प्रदेश संस्कृत संस्थान, लखनऊ
- नित्यकर्म पूजा प्रकाश, गीता प्रेस गोरखपुर
- धर्म शास्त्र का इतिहास, पांडुरंग वामन काणे, (अनु०) अर्जुन चौबे कश्यप, प्रथम भाग,उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान लखनऊ , 1973

SAN-F	***कोर्स–2*** **- सम्भाषण एवं अनुप्रयोग**	*क्रेडिट 02*

इकाई 1– संस्कृत वर्णमाला एवं संख्या–परिचय एवं वर्णोच्चारण, संज्ञा, सर्वनाम

इकाई 2– शब्दरूप एवं धातुरूप–परिचय, उपसर्ग, अव्यय

इकाई 3– गृहोपकरण–शरीरावयव–वस्तुनामावली, आत्मपरिचय

इकाई 4– विभक्त–परिचय, सप्त ककार, अत्र, तत्र, कुत्र, सर्वत्र, एकत्र, दिन समय परिचय

इकाई 5– सुभाषित एवं नीतिवचन, संस्कृत कथा एवं गीत

इकाई 6– भाषा का प्रायोगिक प्रशिक्षण, विभिन्न संवाद एवं दूरभाष वार्ता, संस्कृतक्रीड़ा, व्यवहारदशता

(पिता–पुत्र संवाद, माता–पुत्र संवाद, भाई–बहन संवाद, पति–पत्नी संवाद, गुरू–शिष्य संवाद, छात्रों का परस्पर संवाद, मित्र–संवाद, रोगी–चिकित्सक संवाद, वणिक्–क्रेता संवाद)

अनुशंसित अध्ययन–सामग्री

द्विवेदी, कपिलदेव, प्रारम्भिक रचनानुवाद कौमुदी, विश्वविद्यालय प्रकाशन वाराणसी 1970,

सक्सेना, बाबूराम, संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका अक्षयवट प्रकाशन, इलाहाबाद 1972,

नौटियाल, चक्रधरहंस, अनुवाद चन्द्रिका, चौखम्भा विद्याभवन, वाराणसी 1968,

नौटियाल, चक्रधरहंस, रूप चन्द्रिका, चौखम्भा विद्याभवन, वाराणसी 1971.

संस्कृत व्यवहारसाहस्त्री–संस्कृतभारती

गेयगीत मञ्जरी, संस्कृत भारती

भाषा प्रवेशः, संस्कृत भारती

अभ्यासपुस्तकम्, संस्कृत भारती

चित्तमयःपदकोषः, संस्कृत भारती

अभ्यासदर्शिनी, संस्कृत भारती

Skill Enhancement Course

SAN-F	***कोर्स–1 - संस्कृत लेखन कौशल***	*क्रेडिट 03*

Unit / इकाई	Topics /पाठ्य विषय
I	पत्रव्यवहार , निबंध
II	समसामयिक विषयों पर अनुच्छेद लेखन, विज्ञापन, समाचार लेखन
III	अपठित गद्यांश अथवा पद्यांश पर आधारित प्रश्नोत्तर

सतत मूल्यांकन-

लिखितपरीक्षा (वस्तुनिष्ठ / लघुउत्तरीय)

संस्तुत ग्रंथ-

- हायर संस्कृत ग्रामर, मोरेश्वर रामचंद्र काले, (हिंदी अनुवादक) कपिल देव द्विवेदी, श्री रामनारायणलाल बेनीप्रसाद, इलाहाबाद 2001
- संस्कृत व्याकरण एवं अनुवाद कला, ललित कुमार मंडल, प्रतिभा प्रकाशन, दिल्ली 2007
- अनुवाद चंद्रिका, डॉ यदुनंदन मिश्र, अनुवाद चंद्रिका, ब्रह्मानंद त्रिपाठी, चौखंबा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी
- अनुवाद चंद्रिका, चंद्रधर हंस नौटियाल, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली, 1999
- संस्कृत रचना, वी० एस० आप्टे, (अनु०) उमेश चंद्र पांडेय, चौखंबा विद्याभवन, वाराणसी, 2008
- रचनानुवादकौमुदी, कपिलदेव द्विवेदी, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, 2011
- संस्कृतनिबन्धशतकम्, कपिलदेव द्विवेदी, विश्वविद्यालय प्रकाशन वाराणसी, 2010
- संस्कृतनिबन्धावली, रामजी उपाध्याय, चौखंबा प्रकाशन
- संस्कृत निबन्ध सुधा, राधेश्याम गंगवार, नागराज प्रकाशन, पिथौरागढ़, 2005

SAN-F	***कोर्स–2 पंचाग कौशल***	*क्रेडिट 02*

Unit / इकाई	
I	पंचाङ्ग परिचय।
II	मुहूर्त विचार।
III	ग्रहमैत्री विचार।
IV	इष्टकाल एवं लग्न ज्ञान।
	ग्रहचालन व ग्रह स्पष्टीकरण ज्ञान।

UG Honors
पाठ्यक्रम का विस्तृत विभाजन
चतुर्थ वर्ष, सप्तम सेमेस्टर

कोर्स–10, **SAN-401F - वैदिकसूक्त** क्रेडिट 04

कोर्स का उद्देश्यः–छात्रों को ऋग्वेद तथा अथर्ववेद के कुछ सूक्तों से परिचय कराना

प्रथम इकाई– वेदों का काल–मैक्समूलर, वेवर, जैकोबी, बाल गंगाधर तिलक, एम–विण्टर नित्ज के भारतीय परम्परागत विचार।

द्वितीय इकाई–ऋग्वेद से वरुणसूक्त (1.25), सवितृसूक्त (1.35) तथा सूर्यसूक्त (1.115),

तृतीय इकाई –मरुत्सूक्त (1.38), उषस्सूक्त (3.61) तथा पर्जन्यसूक्त (5.83)

चतुर्थ इकाई– नासदीय (10.129) राष्ट्राभिवर्धन (1.29), काल (19.53)

पञ्चम इकाई–सरमापणि–संवाद (10.108), विश्वामित्र नदी (3.33), पूरुरवा उर्वशी संवाद (10.95)

आन्तरिक परीक्षा– **25 अंक**

कोर्स–11, **SAN-. 402 F - भाषाविज्ञान** क्रेडिट–04

कोर्स का उद्देश्यः–छात्रों को भाषा की उत्पत्ति, वर्गीकरण तथा इसके घटक तत्वों का ज्ञान कराना।

प्रथम इकाई–भाषाशास्त्र–संघटनात्मक भाषाशास्त्र, भाषा की परिभाषा, भाषा, विभाषा, बोली आदि में अन्तर, भाषिक परिवर्तन, उसके कारण तथा दिशाएं।

द्वितीय इकाई–भाषाओं का वर्गीकरण–भारोपीय परिवार, सतम् एवं केन्तुम् वर्ग, इन्डो इरानियन परिवार

तृतीय इकाई–इन्डो आर्यन परिवार, भारतीय आर्यभाषाओं का विकास, ध्वनि परिवर्तन की दिशाएँ, समीकरण, विषमीकरण

चतुर्थ इकाई–भाषा के घटक–स्वनिम (फोनिम), रूपिम (मारफीम), पदिम (टैक्सीम), अर्थिम (सेमेन्टिम) मानस्वर (कार्डियल बावेल), वाग्यन्त्र

पञ्चम इकाई–ध्वनिनियम–ग्रिम, वर्नर, ग्रासमान, अर्थपरिवर्तन की दिशाएं एवं कारण

आन्तरिक परीक्षा– **25 अंक**

कोर्स–12**, SAN-. 403 F - दर्शन** क्रेडिट–04

कोर्स का उद्देश्यः–छात्रों को भारतीय दर्शन का ज्ञान प्राप्त कराना।

प्रथम इकाई–तर्कभाषा, प्रारम्भ से प्रत्यक्ष प्रमाण तक

द्वितीय इकाई–तर्कभाषा, अनुमान से शब्द प्रमाण

तृतीय इकाई– सांख्यकारिका–01 से 20 तक

चतुर्थ इकाई– सांख्यकारिका–21 से 45 तक

पञ्चम इकाई–वेदान्तसार–प्रारम्भ से पञ्चीकरण प्रक्रिया तक

आन्तरिक परीक्षा– **25 अंक**

कोर्स–13, **SAN-. 404 F - काव्य** क्रेडिट–04

कोर्स का उद्देश्यः–छात्रों को संस्कृत के उन्नत काव्य एवं काव्यशास्त्र से परिचित कराना।

प्रथम इकाई– रघुवंशम् प्रथम सर्ग–श्लोक 1 से 30 तक

द्वतीय इकाई– नैषधीयचरितम् प्रथम सर्ग–श्लोक 1 से 30 तक

तृतीय इकाई– मेघदूतम् पूर्वमेघ –श्लोक 1 से 30 तक

चतुर्थ इकाई– बुद्धचरितम्, प्रथम सर्ग–श्लोक 1 से 30 तक

पञ्चम इकाई– नलचम्पू–प्रारम्भ से आर्यावर्तवर्णन पर्यन्त।

आन्तरिक परीक्षा– **25 अंक**

कोर्स–14, **SAN- 405 F - व्याकरण** क्रेडिट–04

कोर्स का उद्देश्यः–छात्रों को व्याकरण–प्रक्रिया का ज्ञान कराना, जिससे वे संस्कृत बोलने और लिखने में समर्थ हो सकें।

पाठ्यग्रन्थ–लघुसिद्धान्तकौमुदी

प्रथम इकाई–तिङन्त–भू धातु की रूपसिद्धि

द्वितीय इकाई–एध् धातु की रूपिसिद्धि

तृतीय इकाई–शेषगणों की प्रथम–प्रथम धातु की रूपसिद्धि

चतुर्थ इकाई–कृदन्त में पूर्वकृदन्त की रूपसिद्धि

पञ्चम इकाई–कृदन्त उत्तरकृदन्त की रूपसिद्धि

चतुर्थ वर्ष अष्टम सेमेस्टर

कोर्स–15, **SAN-406 F – ब्राह्मण एवं यज्ञ** क्रेडिट–04,

कोर्स का उद्देश्यः–छात्रों को ब्राह्मण एवं यज्ञों से परिचित कराना।

प्रथम इकाई–ऐतरेय ब्राह्मण–प्रथम पञ्चिका, अध्याय–1

द्वितीय इकाई–ऐतरेय ब्राह्मण–प्रथम पञ्चिका, अध्याय–2

तृतीय इकाई–ऐतरेय ब्राह्मण–प्रथम पञ्चिका, अध्याय–3

चतुर्थ इकाई–वैदिक यज्ञ एवं उनके प्रमुख भेद,

पञ्चम इकाई–यज्ञीय पारिभाषिक शब्द एवं उपकरण

आन्तरिक परीक्षा– **25 अंक**

कोर्स–16, **SAN-407F - मध्यभारतीय आर्य भाषाएं** क्रेडिट–04

कोर्स का उद्देश्यः–छात्रों का प्राचीन भारोपीय परिवार की भाषाओं के साहित्य एवं दर्शन से परिचित कराना।

पाठ्यग्रन्थ–पालिप्राकृत–अपभ्रंशसंग्रहः, लेखक–डॉ0 राम अवध पाण्डेय

प्रथम इकाई– पालि–मायादेविया सुपिनं, चत्तारि अरियसच्चानि तथा तथागतस्स पच्छिमावाचा।

द्वितीय इकाई–पालि–धम्मपदसंगहो, बाबेरूजातकम् तथा पटिच्चसमुप्पादो।

तृतीय इकाई– प्राकृत–कर्पूरमञ्जरी (तृतीय अंक), स्वप्नवासवदत्तम (चतुर्थ अंक), वसुदत्तकथा

चतुर्थ इकाई– अपभ्रंश–दोहाकोश, सन्देशरासक, अपभ्रंशमुक्तकसंग्रह

पञ्चम इकाई– अशोक अभिलेख (शिलालेख एवं स्तम्भलेख) तथा मौर्योत्तरकालीन अभिलेख

आन्तरिक परीक्षा– **25 अंक**

कोर्स–17**, SAN-408 F - नाटक एवं नाट्यशास्त्र** क्रेडिट–04

कोर्स का उद्देश्यः–छात्रों को नाट्यशास्त्र की कुछ शाखाओं का ज्ञान प्राप्त कराना।

प्रथम इकाई–उत्तररामचरितम् 01 से 03 अंक

द्वितीय इकाई– धनञ्जय, दशरूपक, प्रथम प्रकाश,

तृतीय इकाई–धनञ्जय, दशरूपक, द्वितीय प्रकाश,

चतुर्थ इकाई––धनञ्जय, दशरूपक, तृतीय प्रकाश,

पञ्चम इकाई––धनञ्जय, दशरूपक, चतुर्थ प्रकाश,

आन्तरिक परीक्षा– **25 अंक**

कोर्स–18, **SAN-409 F - काव्यशास्त्र** क्रेडिट–04

कोर्स का उद्देश्यः–छात्रों को संस्कृत के उन्नत काव्यशास्त्र से परिचित कराना।

प्रथम इकाई–काव्यप्रकाश–प्रथम उल्लास द्वितीय उल्लास

द्वतीय इकाई– काव्यप्रकाश, तृतीय उल्लास सम्पूर्ण एवं चतुर्थ उल्लास में प्रारम्भ से रससूत्र तक

तृतीय इकाई–ध्वन्यालोक, प्रथम उद्योत

चतुर्थ इकाई– वक्रोक्तिजीवित, प्रथम उन्मेष, (वक्रोक्ति भेद तक)

पञ्चम इकाई– रसगंगाधर रसनिरूपण पर्यन्त

आन्तरिक परीक्षा– **25 अंक**

कोर्स–19**, SAN-410 F - व्याकरण प्रकिया** क्रेडिट–04

कोर्स का उद्देश्यः–छात्रों को व्याकरण–प्रक्रिया का ज्ञान कराना, जिससे वे संस्कृत बोलने और लिखने में समर्थ हो सकें।

प्रथम इकाई– णिजन्त, सन्नन्त, यङन्त, यङलुक्, नामधातु पुत्रीयति, कृष्णति, शब्दायते।

द्वितीय इकाई– आत्मनेपद, परस्मैपद, भावकर्म–भूयते, कर्मकर्तृ, लकारार्थ।

तृतीय इकाई– तद्धित–अपत्यार्थ, रक्ताद्यर्थ, चातुरर्थिक

चतुर्थ इकाई–शैषिक, भावकर्माद्यर्थ, भवनादि।

पञ्चम इकाई– मत्वर्थीय, प्राग्दिशीय, प्रागिवीय।

आन्तरिक परीक्षा– **25 अंक**

UG Honors With Research
पाठ्यक्रम का विस्तृत विभाजन
चतुर्थ वर्ष, सप्तम सेमेस्टर

कोर्स–20, **SAN-401F -वैदिकसूक्त** क्रेडिट 04

कोर्स का उद्देश्यः–छात्रों को ऋग्वेद तथा अथर्ववेद के कुछ सूक्तों से परिचय कराना

प्रथम इकाई–वेदों का काल–मैक्समूलर, वेवर, जैकोबी, बाल गंगाधर तिलक, एम–विण्टर नित्ज के भारतीय परम्परागत विचार।

द्वितीय इकाई–ऋग्वेद से वरुणसूक्त (1.25), सवितृसूक्त (1.35) तथा सूर्यसूक्त (1.115), मरुत्सूक्त (1.38), उषस्सूक्त (3.61) तथा पर्जन्यसूक्त (5.83)

तृतीय इकाई– नासदीय (10.129) राष्ट्राभिवर्धन (1.29), काल (19.53)

चतुर्थ इकाई– सरमापणि–संवाद (10.108), विश्वामित्र नदी (3.33), पूरुरवा उर्वशी संवाद (10.95)

आन्तरिक परीक्षा– **25 अंक**

कोर्स–21**, SAN-402 F - नाटक एवं नाट्यशास्त्र** क्रेडिट–04

कोर्स का उद्देश्यः–छात्रों को नाट्यशास्त्र की कुछ शाखाओं का ज्ञान प्राप्त कराना।

प्रथम इकाई–उत्तर रामचरितम् 01 से 03 अंक

द्वितीय इकाई– धनञ्जय, दशरूपक, प्रथम प्रकाश,

तृतीय इकाई–धनञ्जय, दशरूपक, द्वितीय प्रकाश,

चतुर्थ इकाई––धनञ्जय, दशरूपक, तृतीय प्रकाश,

पञ्चम इकाई––धनञ्जय, दशरूपक, चतुर्थ प्रकाश,

आन्तरिक परीक्षा– **25 अंक**

कोर्स–22, **SAN- 403 F - दर्शन** क्रेडिट–04

कोर्स का उद्देश्यः–छात्रों को भारतीय दर्शन का ज्ञान प्राप्त कराना।

प्रथम इकाई–तर्कभाषा, प्रारम्भ से प्रत्यक्ष प्रमाण तक

द्वितीय इकाई–तर्कभाषा, अनुमान से शब्द प्रमाण

तृतीय इकाई– सांख्यकारिका–01 से 20 तक

चतुर्थ इकाई– सांख्यकारिका–21 से 45 तक

पञ्चम इकाई–वेदान्तसार–प्रारम्भ से पञ्चीकरण प्रक्रिया तक

आन्तरिक परीक्षा– **25 अंक**

कोर्स–23, **SAN-404 F - काव्य एवं काव्यशास्त्र** क्रेडिट–04

कोर्स का उद्देश्यः–छात्रों को संस्कृत के उन्नत काव्य एवं काव्यशास्त्र से परिचित कराना।

प्रथम इकाई–काव्यप्रकाश–प्रथम उल्लास

द्वतीय इकाई–काव्यप्रकाश, द्वितीय उल्लास में प्रारम्भ से सूत्र 11 तक

तृतीय इकाई–काव्यप्रकाश, द्वितीय उल्लास–लक्षणानिरूपण से अन्त तक

चतुर्थ इकाई–नैषधीयचरित प्रथम सर्ग–श्लोक 1 से 65 तक

पञ्चम इकाई–नैषधीयचरित–प्रथम सर्ग श्लोक 66 से अन्त तक

आन्तरिक परीक्षा– **25 अंक**

कोर्स–24, **SAN-405 F - व्याकरण** क्रेडिट–04

कोर्स का उद्देश्यः–छात्रों को व्याकरण–प्रक्रिया का ज्ञान कराना, जिससे वे संस्कृत बोलने और लिखने में समर्थ हो सकें।

पाठ्यग्रन्थ–लघुसिद्धान्तकौमुदी

प्रथम इकाई–तिङन्त–भू धातु की रूपसिद्धि

द्वितीय इकाई–एध् धातु की रूपिसिद्धि

तृतीय इकाई–शेषगणों की प्रथम–प्रथम धातु की रूपसिद्धि

चतुर्थ इकाई–कृदन्त में पूर्वकृदन्त की रूपसिद्धि

पञ्चम इकाई–कृदन्त उत्तरकृदन्त की रूपसिद्धि

चतुर्थ वर्ष अष्टम सेमेस्टर

कोर्स–25, **SAN-406F - भारतीय ज्ञान परम्परा (ओपेन इलेक्टिव (अदर पी0जी0 प्रोग्राम)** क्रेडिट–04,

प्रथम इकाई– अर्थशास्त्र (प्रथम विनयाधिकारिक) मूल्य एवं महत्त्व

द्वितीय इकाई– मनुस्मृति (द्वितीय अध्याय) मूल्य एवं महत्त्व

तृतीय इकाई–याज्ञवल्क्यस्मृति (व्यवहाराध्याय) आदर्श एवं वैशिष्ट्य

चतुर्थ इकाई– रामायण एवं महाभारत–विषय वस्तु काल सामाजिक एवं साहित्यिक महत्त्व तथा प्रमुख आख्यान

पञ्चम इकाई– पुराण–परिभाषा, महापुराण–उपपुराण, पौराणिक सृष्टि विज्ञान तथा महत्त्वपूर्ण आख्यान

आन्तरिक परीक्षा– **25 अंक**

कोर्स–26, **SAN-407 F - भारतीय संस्कृति एवं पर्यावरण**ा (अनिवार्य कोर्स), क्रेडिट–04

कोर्स का उद्देश्यः–छात्रों को भारतीय संस्कृति से परिचित कराते हुए पर्यावरण–संरक्षण के प्रति जागरूक करना।

प्रथम इकाई–संस्कृति का अर्थ, परिभाषा, विशेषताएं, मूलतत्त्व, भारतीय संस्कृति का विकास, संस्कृति और सभ्यता में अन्तर, अन्य संस्कृतियों पर प्रभाव–

द्वितीय इकाई–संस्कृत साहित्य में समाज, जीवन मूल्य एवं वर्णाश्रम–व्यवस्था

तृतीय इकाई–पुरुषार्थ एवं संस्कार

चतुर्थ इकाई–प्राचीन भारतीय शिक्षा–व्यवस्था

पञ्चम इकाई–पर्यावरण शब्द की उत्पत्ति, अर्थ, परिभाषा एवं महत्त्व, पर्यावरण के तत्त्व, पर्यावरण को क्षति पहुंचाने वाले घटक, संरक्षण के उपाय, पर्यावरणीय प्रदूषण एवं उन्हें दूर करने के उपाय, संस्कृत साहित्य में पर्यावरण।

आन्तरिक परीक्षा– **25 अंक**

कोर्स–27, **SAN-408F- रिसर्च प्रोजेक्ट** क्रेडिट–12